भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए ०१-०७ अगस्त, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य **कृषि** व **कृषि विश्वविद्यालयों** से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

जुलाई-अगस्त, १६	वास्तविक वर्षा (मिमी)						मौसम विभाग संभावित वर्षा (मिमी)							सलाह
माह	जुलाई						अगस्त							
दिनांक	मौसम २१-२७ जुलाई	२७	२८	२९	३०	३१	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	
पंजाब														उत्तरी कपास क्षेत्र के अंतर्गत पंजाब में सफेद मक्खी एक प्रबल नाशीकीट बना हुआ है| भटिंडा के दो गावों में, फरीदकोट जिले के 06 गावों में, मुक्तसर के 04 गावों में तथा मनसा के 01 गाव में सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक अर्थात 06 सफेद मक्खी/पत्ती दर्ज की गई है | फाजिल्का में खुएना सर्वर ब्लाक में 16 गाव , फाजिल्का ब्लाक के 02 स्थलों तथा अबोहर ब्लाक में 21 गावों में| जैसिड का प्रकोप सभी स्थलों पर है तथा इसकी संख्या 4-6/पत्ती के मध्य है | फसल के समय पर प्रबंधन के लिए नियमित निगरानी करते रहें| कपास तथा खरपतवारों पर सफेद मक्खी के प्रकोप के लिए खेतों की नियमित निगरानी करें | खेतों को खरपतवारों से मुक्त रखें | सफेद मक्खी अथवा/और जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर पर प हुंचने पर फसल पर
भटिंडा	0	0	0	2	0	0	0	0	3	0	5	6	12	
फिरोजपुर	7.3	0	0	0	0	0	0	0	3	0	5	6	12	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	3	0	5	6	12	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	10	

														नीम आधारित कीटनाशकों अथवा डायफेंथ्यू रॉन अथवा स्पिरोमेसिफेन अथवा फ्लोनीकेमिड का प्रात: 10.00 बजे से पहले छिड़काव करें| कीटनाशकों का छिड़काव पत्तियों की निचली सतह पर भी अच्छी तरह करें| वर्षा अथवा सिंचाई के पश्चात आकस्मिक मुरझान के लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं	इसके लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों के अंदर ही पंजाब कृषि विश्वविद्यालय की सिफारिशों के अनुसार 10 पीपीएम कोबाल्ट क्लोराइड (10 मिग्रा./ली. पानी) का अनुप्रयोग प्रभावित पौधों पर करें	पछेती बोई गई फसल में नत्र की एक-तिहाई मात्रा(40 से 45 किग्रा. यूरिया/एकड़) दी जा सकती है| पत्ती धब्बा अथवा पत्ती शीर्णता के नियंत्रण के लिए फसल पर कार्बे डेजिम 50डब्लूपी 250ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टर 750 ली. पानी की दर से छिड़काव करें अथवा पायरेक्लोस्ट्रोबिन 20डब्लूजी की 500 ग्रा. मात्रा 500 लीटर पानी/हेक्टर की दर से लेकर छिड़काव करें|
हरियाणा														हरियाणा में सिरसा में कुछ किसानों के खेतों पर सफेद मक्खी की संख्या 0-4/पत्ती के मध्य दर्ज की गई है	सर्वेक्षण में पता चला कि चोरमार गाँव के एक स्थल पर सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक थी| किसानों के खेतों में कई स्थलों पर जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| देसी कपास में कुछ स्थलों पर चित्तीदार सूँडी का प्रकोप भी देखा गया है| जैसिड की संख्या 2 से 3 प्रति पत्ती के मध्य दर्ज की गई| फूलकीट(थ्रिप्स) की संख्या प्रति पत्ती 8 से 15 के मध्य देखी गई| किसानों को सलाह दी जाती है कि किफायती पीले रंग के चिपचिपे ट्रैप प्रौढ़ सफेद मक्खी पकड़ने के लिए उपलब्ध होने पर फसल में लगाएँ	पंद्रह या अधिक दिनों का सूखाकाल होने पर
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	6	6	8	
हिसार	2.9	3	14	13	0	1	0	0	0	0	6	6	8	
फ़तेहाबाद	0	0	0	8	0	0	0	0	0	0	6	6	8	

														सफेद मक्खी की संख्या तेजी से बढ़ सकती है	कपास की फसल पर पर्णकुंचन रोग के नियंत्रण के लिए किसी भी रासायनिक कीटनाशक का छिड़काव न करें	आवश्यकता होने पर नीम आधारित कीटनाशकों अथवा नीम तेल से तैयार पदार्थों का छिड़काव सफेद मक्खी अथवा जैसिड के लिए इनकी संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचने पर करें	किसानों को सलाह दी जाती है कि किन्हीं दो कीटनाशकों का मिश्रण न बनाएँ|
राजस्थान														श्रीगंगानगर में अगेती बोई गई फसल लगभग 85 से 90 दिनों की तथा पछेती बोई गई फसल 60 से 65 दिनों की कली निर्माण अवस्था में है| उर्वरकों का मृदा में अनुप्रयोग पूरा हो गया है तथा खेती की सामान्य क्रियाएँ चल रही हैं	खरपतवारों का नियंत्रण हस्तनिराई तथा अंत:सस्य क्रियाओं को दोहराकर किया गया	श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ़ जिलों के अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में रस चूषक कीटों का प्रकोप बना हुआ है| सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है	सफेद मक्खी से अधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में फसल की नियमित निगरानी करने की किसानों को सलाह दी जाती है|
हनुमानगढ़	2.1	0	0	1	0	0	0	0	5	4	1	1	1	
श्रीगंगानगर	0.7	1	19	0	0	0	0	11	5	5	1	1	1	
बांसवाड़ा	65.1	41	9	1	3	7	2	56	8	8	4	3	3	
उड़ीसा														ओडीशा में बुआई का कार्य पूरा हो चुका है	उर्वरकों का प्रथम मृदा अनुप्रयोग तथा पौधों पर मिट्टी चढ़ाने का कार्य किया गया है	चूँकि फसल 29 से 36 दिनों की है, मिट्टी चढ़ाते समय ही हरी खाद के लिए सनई को कतारों के मध्य ही मिट्टी में मिला दें	किसानों का सलाह दी जाती है कि खरपतवार नियंत्रण के कार्य प्रारंभ कर दें तथा इसके साथ ही रस चूषक कीटों के प्रकोप का नियंत्रण के लिए नीम तेल @3मिली/ली. के साथ 1.0 ग्रा. साबुन चूर्ण प्रति ली. की दर लेकर फसल पर छिड़काव करें	
कोरापुट	101.5	5	2	1	7	35	26	24	11	26	24	127	70	
कालाहांडी	49.6	3	2	4	4	0	8	12	7	8	30	74	25	
बोलांगीर	37.4	14	0	7	2	6	10	4	11	5	22	79	20	

गुजरात													
अमरेली	10.6	1	6	7	10	12	13	1	27	16	10	15	13
भावनगर	15.8	4	10	14	17	16	22	0	23	9	4	9	9
जामनगर	3.8	0	0	19	36	20	13	1	23	18	15	8	0
राजकोट	1.9	0	2	2	6	23	40	0	23	16	10	15	3
भरूच	13.9	6	6	6	1	13	11	7	45	14	7	9	23
सबरकांठा	20.8	2	11	2	19	5	5	18	72	24	3	11	6
सुरेन्द्रनगर	11	1	2	0	2	3	4	0	24	18	7	5	3
अहमदाबाद	6.9	1	9	4	1	9	9	0	48	26	7	15	11
वडोदरा	18.1	12	22	17	1	10	27	21	57	38	23	20	28
पाटन	25.6	18	0	5	1	15	0	0	75	47	10	24	10
मेहसाना	7.8	2	10	4	3	25	6	0	75	28	10	17	10
मध्यप्रदेश													
खरगोन	46.1	35	9	3	0	23	2	8	14	15	3	5	13
धार	59.8	46	22	1	1	6	3	29	65	3	0	0	0
खंडवा	85.3	62	24	22	0	0	26	9	11	22	4	7	24

राज्य में बुआई का कार्य पूरा हो चुका है| जुलाई के बाद बोई गई फसल अपनी अन्तिम अवधि में गूलर की गुलाबी सूँडी से बहुत दुष्प्रभावित होगी| अगस्त 1, 2016 तक कपास की बुआई 21.86 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में हो चुकी है | इसमें से 30% क्षेत्रफल को देरी से बुआई वाला माना जा सकता है | बुआई आगे-पीछे होने तथा देरी से होने के कारण इस मौसम में फसल में गुलाबी सूँडी का प्रकोप गंभीर रहने की संभावना है | जूनागढ़ में फसल 20 से 25 दिनों की है| निराई तथा अंत: सस्य क्रियाएँ जारी हैं| जैसिड संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है | अगेती बोई गई फसल में गुलाबी सूँडी का प्रकोप पाया गया है| जूनागढ़ के 20 स्थलों पर गुलाबी सूँडी का ग्रसन 0 से 50% के मध्य है तथा सूंडियों की संख्या 0 से 10 प्रति 20 पुष्प (फूल) है | किसानों के खेतों में पत्तियों तथा अनियमित पत्ती शिरा को खाते तथा हानि पहुँचाते हुए *मिलोसीरस* घुन के प्रौढों को देखा गया है| किसानों को सलाह दी जाती है कि इस के नुकसान पर ध्यान न दें | सूरत में फसल पौद अवस्था में है | मानसून-पूर्व बोई गई कपास की फसल पर गुलाबी सूँडी का ग्रसन रिपोर्ट किया गया है| मानसून-पूर्व बोई गई फसल पुष्पन अवस्था में होने के कारण गुलाबी सूँडी के लिए फीरोमोन ट्रैप फसल में स्थापित कर सूँडी को मॉनीटर करें | इस प्रकार के खेतों में गुलाबवत् फूलों को हाथ से इकट्ठा करके नष्ट कर दें|

प्रदेश के सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में बुआई का कार्य पूरा हो चुका है| कई स्थानों पर फसल शीर्ष वानस्पतिक तथा कली आने की शुरुआती अवस्था में 55 से 60 दिनों की है| विगत सप्ताह सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में लगातार रुक-रुककर वर्षा रिकार्ड

की गई| इस वर्षा से कपास के विकास तथा वृद्धि में सहायता मिली| निरंतर वर्षा होने से किसानों को खरपतवार नियंत्रण का अवसर नहीं मिला| लगभग सभी क्षेत्रों में रसचूषक कीटों, विशेषकर, जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया जो कि आर्थिक हानि सीमा से कम था| नीम तेल आधारित पदार्थों का छिड़काव सफेद मक्खी तथा/अथवा जैसिड के लिए आर्थिक हानि स्तर पर आवश्यकतानुसार किया जा सकता है|

महाराष्ट्र													
धुले	11	11	5	0	0	2	0	3	28	28	18	12	15
नांदूरबार	18.6	4	3	3	12	4	5	36	30	29	19	14	13
जलगांव	38	16	14	2	2	2	9	13	13	29	5	10	21
अहमदनगर	50.1	10	10	3	0	0	1	18	40	37	70	60	64
औरंगाबाद	39.5	7	13	0	0	3	3	4	25	15	13	11	18
जालना	108.2	20	36	3	1	0	2	3	6	3	0	0	26
बीड़	80	9	9	3	3	6	10	0	11	3	0	3	16
नांदेड़	98.2	22	21	5	12	20	23	2	17	5	0	0	15
परभणी	82.6	8	16	0	19	23	16	1	15	3	0	3	20
हिंगोली	95.8	3	24	0	3	32	16	1	25	4	0	0	17
बुलढाना	106.3	22	45	1	0	0	16	9	7	10	3	8	10
अकोला	86.1	36	30	0	1	0	16	11	3	4	2	8	15
वासिम	120.9	29	21	9	7	11	25	9	5	2	0	12	10
अमरावती	121.4	44	23	2	2	1	20	7	4	3	2	30	40
यवतमाल	79.5	15	17	3	7	24	13	6	4	2	0	18	25

जुलाई 30, 2016 तक कपास की बुआई 36.78 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में हुई| 80% से भी अधिक क्षेत्रफल में बुआई समय पर निर्धारित तारीख 15 जुलाई से पहले हुई है | इस प्रकार राज्य के सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में वर्षा बहुत अच्छी हुई है | शेष फसलकाल में भी अच्छी वर्षा होने का पूर्वानुमान है | इस प्रकार फसल के बेहतर प्रबंध से अच्छी उपज प्राप्त होने की उम्मीद है| यद्यपि मध्य महाराष्ट्र में उचित देखभाल के अभाव में गुलाबी सूँडी से उपज में नुकसान हो सकता है | विगत वर्ष मध्य महाराष्ट्र के सिंचित क्षेत्रों से गुलाबी सूँडी का नुकसान होने की रिपोर्ट है | इस सूँडी से हानि जलगाव, धुले, तथा नांदूरबार जिलों में अधिक थी| पछेती बोई गई फसल में हानि अधिक थी| दूसरी व तीसरी चुनाई की कपास में भी गुलाबी सूँडी का नुकसान हुआ | विदर्भ क्षेत्र में कपास की फसल मध्य दिसंबर तक समाप्त हो गई थी| इस प्रकार गुलाबी सूँडी से हानि बहुत कम हुई| राज्य के कुछ क्षेत्रों से जैसिड का ग्रसन रिपोर्ट किया गया है| नाशीकीटों को आर्थिक हानि स्तर से कम रखने तथा मित्र कीटों की संख्या फसल में बनाए रखने के लिए इस अवस्था में नीम तेल आधारित पदार्थों का अनुप्रयोग

वर्धा	93.7	30	16	9	2	23	36	6	3	2	3	30	35	सर्वाधिक उपयुक्त है | अधिकांश क्षेत्रों में लगातार वर्षा होने से खरपतवार नियंत्रण के कार्य नहीं किए जा सके | गीली मृदा की स्थितियों में जिन क्षेत्रों में अंत:सस्य क्रियाएँ तथा हस्त निराई कार्य नहीं किये जा सके वहाँ ग्लूफोसिनेट अमोनियम 13.5एसएल(15% W/V) 2-3 लीटर प्रति हेक्टर 500 ली. पानी में लेकर सीधे छिड़काव के रूप में अनुप्रयोग सावधानी से फसल बचाकर खरपतवारों पर किया गया|
नागपुर	107.4	33	14	1	7	23	13	3	4	2	2	38	45	

तेलंगाना													
आदिलाबाद	117.7	21	8	3	5	5	18	7	35	8	5	8	12
वारंगल	117	15	2	3	12	9	2	1	6	5	5	8	12
खम्मन	43.2	4	1	2	6	11	6	8	8	6	5	35	12
कारिंगर	102.5	19	8	7	8	3	28	2	35	8	5	8	12
नालगोंडा	67.5	26	13	2	11	5	6	1	6	4	6	12	10
महबूबनगर	53.6	11	13	3	5	13	1	11	8	4	5	6	8
आंध्रप्रदेश													
गुन्टूर	8.7	2	3	7	9	12	3	3	6	4	5	6	4
प्रकासम	23.9	13	6	0	0	3	1	5	0	0	4	6	3
कर्नाटक													
धारवाड़	26.4	0	7	13	2	1	3	4	5	7	9	6	9
हवेरी	43.9	11	6	4	3	7	3	2	3	4	3	3	4
मैसूर	24.9	11	2	37	0	3	0	0	3	2	3	3	3

तेलंगाना में 30 जुलाई, 2016 तक कपास की बुआई 11.58 लाख हेक्टर में की जा चुकी थी | महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में वर्षा का वितरण असंतोषजनक तथा असमान रहा | दूसरे कपास उत्पादक जिलों में वर्षा पर्याप्त हुई है | वारंगल , खम्म म, महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में नमी संरक्षण उपाय करने की गंभीर सिफारिश की जाती है | राज्य के किसी भी हिस्से से नाशीकीटों तथा रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं किया गया है | इस समय कहीं भी रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है|

आंध्र प्रदेश में मुख्यत: कुर्नुल तथा गुंतूर जिलों में बुआई कार्य अभी भी चल रहे हैं | इस प्रदेश में कपास लगभग 2 ,84,780 हेक्टर क्षेत्रफल में लगाई गई है| कुछ क्षेत्रों में सूखाकाल के कारण बुआई के कार्यों में विलंब हु आ है | फसल पौद अवस्था से वानस्पतिक अवस्था के मध्य है | कुछ स्थानों पर अंत:सस्य क्रियाएँ की जा रही हैं| अभी तक खरप तवारों/नाशीकीटों/रोगों का प्रकोप नहीं है|

सभी कपास उत्पादल क्षेत्रों में बीटी कपास की बुआई पूरी हो चुकी है| कुछ स्थानों पर पछेती बोई गई फसल 30 दिनों की है| अगेती बोई गई फसल 40 से 50 दिनों की शीर्ष वानस्पतिक तथा कलिकायन की प्रारंभिक अवस्था में है जिस में पहले बनी फलन शाखाएँ भी हैं| धारवाड़ तथा बेलगा म के कपास उत्पादक क्षेत्रों में विगत सप्ताह 5 से 15 मिमी सतत वर्षा रिकार्ड की गई है | इस वर्षा से कपास की फसल की संपूर्ण वानस्पतिक वृद्धि तथा फलन शाखाओं के उचित विकास में मदद मिली है| अधिकांश स्थानों में 25 किग्रा. यूरिया तथा 25 किग्रा. पोटाश प्रति एकड़ का प्रथम

													मृदा अनुप्रयोग किया गया | खरपतवारों का नियंत्रण अंत:सस्य क्रियाएँ तथा हस्त निराई को दोहराकर किया गया | अपरिहार्य परिस्थितियों में अंकुरण-पश्चात क्वीजालोफोप इथाइल @ 1.0मिली/लीटर पानी और पायरीथायोबैक सोडियम @ 0.8मिली/ली. की दर से खरप तवारनाशकों का अनुप्रयोग एक बीजपत्री तथा द्विबीजपत्री खरपतवारों के लिए 30 दिनों से अधिक की फसल पर किया गया| हवेरी तथा बेलगाम के कुछ हिस्सों में किसानों को सलाह दी जाती है कि भारी वर्षा के कारण कपास के खेतों में जमा पानी की निकासी करें | पानी की निकासी करने के बाद फसल के जलमग्नता से प्रभावित हिस्से में मृदा में यूरिया का अनुप्रयोग करें | रायचूर तथा आस-पास के क्षेत्रों में कपास 80% क्षेत्र फल में फसल एक महीने की है | कुछ क्षेत्रों में खरपतवार का प्रकोप देखा गया है | हवेरी, बेलगाम तथा धारवाड़ जिलों के अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्र में रस चूषक कीटों तथा प्ररोह घुन का प्रकोप विद्यमान है | आर्थिक हानि सीमा पर आवश्यकतानुसार नीम तेल आधारित पदार्थों का प्रयोग किया जा सकता है| फूलकीट(थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप कुछ क्षेत्रों में देखा गया है | कामराजनगर में सफ़ेद मक्खी तथा जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा के करीब रिकार्ड किया गया| भाकृअनुप.-सीआईसीआर परामर्शी के वर्ष 2016-17 के लिए कपास स्वास्थ्य प्रबंधन युक्तियाँ इसकी सिफारिशों के अनुसार नियंत्रण उपाय करने की किसानों को सलाह दी जाती है|

तामिलनाडु													कपास की बुआई का कार्य जारी है। बोई गई फसल पौद अवस्था में है। हल्की वर्षा होने पर शेष क्षेत्र में कपास की बुआई का कार्य पूरा करें। प्रारंभिक जुताई के कार्य किए जा चुके हैं।
पेरंबलुर	15.3	0	17	48	0	0	0	0	0	0	0	1	1
सलेम	64.6	0	10	37	0	3	0	0	0	0	0	1	1
त्रिची	37.8	11	22	10	0	0	0	0	0	0	0	1	1
विरडुनगर	23.8	23	15	1	2	0	0	0	0	0	0	0	1

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)